शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मिथिलेश्वर के उपन्यासों में नारी संघर्ष

बबीता कुमारी (शोधार्थी)
डॉ.अशोक कुमार गुप्ता (निर्देशक)
सह-आचार्य (हिन्दी-विभाग)
महारानी श्री जया राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
भरतपुर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

समकालीन साहित्यकार मिथिलेश्वर जनवादी और संवेदना के धरातल पर अपने उत्कृष्ट विचारों की अभिव्यक्ति करते हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में व्यक्ति और समाज के विभिन्न पहलुओं को स्थान दिया है। जिनके माध्यम से उन्होंने एक अंचल विशेष के सामाजिक-जीवन का यथार्थ अंकन पाठक-वर्ग के सामने प्रस्तुत किया है। जो अपने में एक अनूठापन लिये हुए है। मिथिलेश्वर ग्रामीप्समाज के कुशल चितेरे हैं। अपने उपन्यासों में उन्होंने ग्राम्य-पक्ष का उद्घाटन, बड़ी ही सटीक व रोचक भाषा में किया है। ग्रामीण वातावरण के अनुसार जीवन-यापन करने वाली नारी मिथिलेश्वर के उपन्यासों का एक अहम् पक्ष है। जो आधुनिक ग्रामीण नारी की स्थिति को हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में मिथिलेश्वर के उपन्यासों में नारी संघर्ष पर विचार किया गया है।

भूमिका

भारतीय साहित्य में नारी विमर्श को प्रमुख स्थान दिया गया है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक नारी जीवन का वर्णन साहित्य में होता आया है। वर्तमान साहित्य का मुख्य विषय नारी संघर्ष रहा है। संघर्ष का स्तर कोई भी हो, संघर्ष, संघर्ष होता है। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक नारी की निश्चित अवधारणा एक उलझन बनकर हमारे सामने रह गई थी। नारी का कोई भी स्पष्ट रूप समाज में निखर कर नहीं आया था। मृणाल पाण्डे के शब्दों में - ''समाज में स्त्रीत्व की मूल अवधारणा नकारात्मक है। लगभग सभी धार्मिक और दार्शनिक दायरों में स्त्री को पुरुष के संदर्भ में एक अपूर्ण और सापेक्ष जीवन के रूप में देखा गया है।''[1]

लेकिन आधुनिक समाज में नारी के बदलते तेवरों ने समाज को परिवर्तनशीलता प्रदान की है। आज तक नारी चारदीवारी और मर्यादा के बंधनों में जकड़े जीवन-यापन कर रही थी। उसी नारी ने आज अपने लिए प्रगति का मार्ग खोलना शुरू कर दिया है। रहस्य के चंगुल से नारी निकलने को छटपटाने लगी है। ''नारी ने अपनी स्थिति में परिवर्तन चाहा। उसने भी बाह्य क्षेत्र में प्रवेश चाहा। फलतः नारी स्वातंत्र्य की आवाज उठी। आज सारे संसार में नारी स्वातंत्र्य की आवाज प्रत्यक्ष गोचर हो रही है। नारी, गृह-जीवन के रण-क्षेत्र में प्रवेश करना चाह रही है। उसमें उसे सफलता भी मिली है।''[2]

मिथिलेश्वर ने भी नारी स्वतंत्रता की धारा को अपने उपन्यास लेखन के माध्यम से बल प्रदान किया है। उन्होंने अपने उपन्यासों में अधिकतर ग्रामीण नारी के संघर्ष को व्याख्यायित किया है। ग्रामीण-समाज में जीने वाली नारी को शहरी नारी की अपेक्षा अधिक संघर्ष करना पड़ता है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ग्रामीण-समाज के बुजुर्गियत उसूलों को नकारने के लिए अधिक शक्ति की आवश्यकता होती है। मिथिलेश्वर के उपन्यासों का कथानक ग्रामीण नारी का संघर्ष है। रूढ़ियों का शिकार होने से बचने के लिए संघर्ष करती, यौन-शोषण के लिए विवश और उससे छुटकारा पाने की राह ढूँढ़ती, अपने जन्म से ही तिरस्कृत अपनी अस्मिता को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नरत, सामाजिक मूल्यों की स्थापना की ओर अग्रसर, घिनौनी राजनीति को दरकिनार करके स्वच्छ राजनीति में भागीदारी प्रदान करती तथा प्रेम को समर्पित और प्रेम के खोखलेपन में धोखा पाने के बाद अपने व्यक्तिगत प्रेम को समष्टिगत रूप प्रदान करने के लिए संघर्षरत नारी मिथिलेश्वर के उपन्यासों का मूल स्वर है।

मिथिलेश्वर के उपन्यासों में नारी संघर्ष

मिथिलेश्वर के उपन्यासों के नारी चरित्र ग्रामीण वातावरण की उपज हैं। वे वहीं जन्म लेते हैं और उसी ग्रामीण परिवेश को अपना कर्मक्षेत्र बनाते हुए केवल निजी हित के लिए ही नहीं एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए भी संघर्षशील बने रहते हैं। मिथिलेश्वर के उपन्यासों के नारी पात्र ग्रामीण-समाज के रूढ़ परम्परागत मूल्यों के विद्रोह में खड़े नजर आते हैं जो केवल एक नारी के लिए नहीं बल्कि समस्त नारी जाति के लिए एक अभिशाप होते हैं। मिथिलेश्वर के उपन्यासों के प्रत्येक नारी पात्र अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनका प्रतिकार करते नजर आये हैं। 'झुनिया' उपन्यास की प्रमुख नारी चरित्र झुनिया जो एक दलित वर्ग की बाला है। वह अपने बूढ़े पिता के साथ सामंत वर्ग के राणा बहादुर सिंह के खेतों में मजदूरी कर अपनी मानवीय जरूरतों को पूरा करती है। लेकिन वहीं राणा बहादुर सिंह उसका बेटा निखिल तथा साथ में राजनेता जोगिन्दर और गुण्डा हरनाम उसका शारीरिक शोषण करते हैं। झुनिया अपने इस शारीरिक-शोषण की विवशता पर चिन्तित होती है। क्योंकि शारीरिक-शोषण का प्रतिकार करने और उस पर अड़े रहने की क्षमता जातीय स्तर पर उसे प्राप्त नहीं होती है। इसलिए वह अपने संघर्ष का रास्ता पलायनवादी प्रवृत्ति को चुनती है। वह अपनी जाति का लड़का सोमारू जिससे वह प्रेम करती है उसका सहारा लेकर गाँव से चली जाती है।

'युद्धस्थल' उपन्यास के दो नारी चरित्र रामशरण बहू और दुखन की माँ अपनी सामाजिक क्षमता के आधार पर संघर्ष करती हैं। रामशरण बहू सामाजिक रूढ़ियों की शिकार होती है। वह बांझ, विधवा और डायन जैसी रूढ़ि से एक साथ जूझती रहती है। समाज उसको सहारा देने की बजाय बेसहारा छोड़ उस पर अत्याचार करता है। वह संघर्ष करते हुए अन्त में समाज में व्याप्त 'डायन' जैसी रूढ़ि की शिकार हो जाती है। रामशरण बहू की सेविका दुखन की माँ गरीब और निम्न जाति की होते हुए अपनी सामर्थ्य और सीमाओं के तहत समाज में व्याप्त 'डायन' जैसे अंधविश्वास और उससे अपनी मालकिन को बचाने के आक्रोश और विद्रोह की जीवित प्रतिमूर्ति नजर आती है। रामशरण बहू को चुपचाप आरोप सहन करने पर दुखन की माँ कहती है - "आप बहुत सोझिया (सीधी) हैं..... सोझिया का मुंह कुत्ता चाटता है..... मैं होती तो उसे बिना मारे नहीं छोड़ती..... टेढ़ बनना ही पड़ता है..... बिना टेढ़ हुए गुजारा नहीं। टेढ़ से सब डरते हैं।"[3]

'प्रेम न बाड़ी ऊपजै' उपन्यास की नायिका शकुन्तला पहले अपने व्यक्तिगत प्रेम को पाने के लिए संघर्ष करती है लेकिन प्रेम के खोखलेपन तथा घिनौने यथार्थ से रू-ब-रू होने पर अपने

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अक्टूबर 2018
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

व्यक्तिगत प्रेम को समष्टि रूप देने के लिए संघर्षशील बन जाती है। 'यह अंत नहीं' उपन्यास की चुनिया का व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक और प्रेरणाप्रद बनकर उभरा है। मिथिलेश्वर के नारी चरित्रों में चुनिया का चरित्र एक ऐसा चरित्र है, जिसने नारी गृहस्थ-जीवन के सभी पहलुओं को अपनी उत्कट जिजीविषा, संघर्ष की निरंतरता सहज स्वाभिमानी और श्रम स्वेद से न केवल उजला बनाये रखा है बल्कि विषमताओं और विसंगतियों की विकृत सामाजिकता के बीच भी उसे मैला नहीं होने दिया है। वह व्यक्तिगत लड़ाई में भी हारती नहीं और सामाजिक संघर्ष में भी हार की रणनीति नहीं अपनाती बल्कि अपने पति जोखन को भी जीवन की किसी एक घटना को अंत न मानकर कर्म और संघर्ष की ओर हमेशा अग्रसर करती है। जोखन का अपहरण होने पर जो काम प्रशासन-वर्ग नहीं कर पाता वह काम चुनिया करती है और अपने पति की खोज में निकल उसे ढूँढ निकालती है। जोखन चुनिया से अपने बुरे समय के निक्कल जाने की कहता है तो चुनिया कहती है - ''यह अंत नहीं जोखू.....! इसे अंत मानकर हम फिर धोखा खा जाएँगे....! खून-खराबा और लड़ाई-झगड़े से गाँव को उबारकर भी तो हमने अइसा ही सोचा था.....। बाकिर इसके चलते अपने जी को हलकाना नहीं करना.....! फिर जइसा होगा, देखेंगे, जितना बन सकेगा, करेंगे। हम वइसा तिनका नहीं कि कोई फूँककर उड़ा दे....। वइसा गाजर-मूली नहीं कि चट से कोई काट दे.....। हमारे पँजरे अब दुबारा ठेंकने का साहस जल्दी कोई नहीं करेगा.....।''[4]

'सुरंग में सुबह' की पात्र अंजलि लोकतंत्र के विकृत रूप से समाज के लिए उसके घातक परिणाम से चिन्तित नजर आती है। वह स्वस्थ राजनीति करके लोकतंत्र के दबे सिद्धान्तों को अपनी सामाजिक-राजनीतिक विश्लेषण की अद्भुत क्षमता से उजागर करना चाहती है। तो वहीं 'माटी कहे कुम्हार से' उपन्यास मुनिला के जीवन के पड़ावों के संघर्ष की महागाथा है। मुनिला झोंपड़पट्टी से लेकर राजनीति के शिखर को अपने संघर्ष से प्राप्त करती है। जन्म से ही तिरस्कृत समाज में पली-बड़ी। वहाँ से उठकर गाँव और गाँवों से शहर तक के सफर को तय करती एक दिन राजनीति के उच्च शिखर पर विराजमान हो जाती है। यह सम्पूर्ण सफर मुनिला अपनी व्यक्तिगत धारणाओं और जुझारूपन से प्राप्त करती है।

बेबाक् अभिव्यक्ति, स्पष्टवादिता, गलत के प्रति आक्रोश की भावना आदि उसके व्यक्तित्व की विशेषताएँ हैं। जो धन, बल, जन और भय के कारण दबती नहीं बल्कि अधिक विराट रूप धारण कर लेती हैं। अपनी इन्हीं धारणाओं के लिए संघर्ष करते हुए मुनिला मृत्यु को प्राप्त हो जाती है लेकिन अपने सिद्धान्तों को नहीं छोड़ती। 'जनहित सेवादल' का अध्यक्ष अपने पार्टी सदस्य शारदा के द्वारा मुनिला पर गलत राजनीति करने के लिए दबाव डलवाता है। मुनिला स्पष्ट शब्दों में कहती है - ''मुझको अइसी राजनीति नहीं करनी दीदी जिसमें चुनाव जीतने के लिए अइसा बदलना पड़े जिसको हमारा मन खुदे गलत मानता हो...। गलत बोलकर चुनाव जीतने वाला आदमी बाद में सही करेगा, ई तो पत्थर पर दुब जमाना होगा...।''[5]

मिथिलेश्वर के उपन्यासों के नारी चरित्र अपनी अस्मिता के संघर्ष में ही जीती हैं और उसी की प्राप्ति के लिए मृत्यु को भी प्राप्त हो जाती हैं। रामशरण बहू और मुनिला अन्त तक संघर्ष करती हैं। अपना रणक्षेत्र मृत्यु के बाद ही छोड़ती हैं।

निष्कर्ष

मिथिलेश्वर ने अपने उपन्यासों में नारी मन के द्वंद्व, पीड़ाओं और विद्रोह के भावों को बड़ी ही गहनता से उकेरा है। मिथिलेश्वर नारी-जीवन और उसकी समस्याओं तथा उन समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए संघर्षरत नारी का आइना हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं। वह हमें नारी संघर्ष की एक सजग अनुभूति प्रदान करते हैं। मिथिलेश्वर ने दो काम एक साथ अपने उपन्यासों के माध्यम से कर दिये हैं, जिससे समकालीन नारी वर्ग, नारी की सामाजिक दशा से अवगत हो सके और संघर्षरत नारी का अनुसरण भी कर सके। उन्होंने नारी पक्षों को सम्पूर्णता से उद्घाटित किया है। उनके उपन्यासों में आधुनिक मूल्य चेतना में विश्वास करने वाले नारी चरित्रों में सहजात दुर्बलताओं के विरूद्ध संघर्षशीलता तथा सर्वांगीण स्वतंत्रता एवं मुक्ति का समर्थन और समस्त पारम्परिक मूल्यों के प्रति तीव्र विक्षोभ का भाव लिए संघर्षशील नारी-जीवन पूरी सच्चाई के साथ अभिव्यक्त हुआ है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 मृणाल पाण्डे स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, पृष्ठ 14.

2 डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्य में सामाजिक चिन्तन, पृष्ठ 18.

3 मिथिलेश्वर, 'युद्धस्थल, पृष्ठ 150.

4 मिथिलेश्वर, 'यह अंत नहीं, पृष्ठ 390.

5 मिथिलेश्वर, 'माटी कहे कुम्हार से', पृष्ठ 477.